اٰیاتہا ۱۱۲ ۲۱ سُوْرَۃُ الْاَنْبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ ٧٣ رکوعاتہا ٧

सूरए अम्बियाअ मक्किय्या है इस में एक सो बारह आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ ﴿١﴾ مَا يَاْتِيْهِمْ

लोगों का ह़िसाब नज़्दीक और वोह ग़फ़्लत में मुंह फेरे हैं[2] जब उन के

مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۙ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً

रब के पास से उन्हें कोई नई नसीह़त आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए[3] उन के दिल

قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ

खेल में पड़े हैं[4] और ज़ालिमों ने आपस में खुफ़्या मश्वरत की[5] कि येह कौन हैं एक तुम ही

مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٣﴾ قُلْ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ

जैसे आदमी तो हैं[6] क्या जादू के पास जाते हो देखभाल कर नबी ने फ़रमाया मेरा रब जानता है आस्मानों

فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٤﴾ بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ

और ज़मीन में हर बात को और वोही है सुनता जानता[7] बल्कि बोले परेशान

1 : सूरते अम्बियाअ मक्किय्या है इस में सात रुकूअ़ और एक सो बारह 112 आयतें और एक हज़ार एक सो छियासी 1186 कलिमे और चार हज़ार आठ सो नव्वे 4890 ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी ह़िसाबे आ'माल का वक़्त रोज़े क़ियामत क़रीब आ गया और लोग अभी तक ग़फ़्लत में हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुन्किरीने बअ़्स के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को नहीं मानते थे और रोज़े क़ियामत को गुज़रे हुए ज़माने के ए'तिबार से क़रीब फ़रमाया गया क्यूं कि जितने दिन गुज़रते जाते हैं आने वाला दिन क़रीब होता जाता है। **3 :** न उस से पन्द पज़ीर हों, न इ़ब्रत ह़ासिल करें, न आने वाले वक़्त के लिये कुछ तय्यारी करें। **4 : अल्लाह** की याद से ग़ाफ़िल हैं। **5 :** और उस के इख़्फ़ा (छुपाने) में बहुत मुबालग़ा किया मगर **अल्लाह** तआ़ला ने उन का राज़ फ़ाश कर दिया और बयान फ़रमा दिया कि वोह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत येह कहते हैं **6 :** येह कुफ़्र का एक उसूल था कि जब येह बात लोगों के ज़ेहन नशीन कर दी जाएगी कि वोह तुम जैसे बशर हैं तो फिर कोई उन पर ईमान न लाएगा। हुज़ूर के ज़माने के कुफ़्फ़ार ने येह बात कही और इस को छुपाया लेकिन आज कल के बा'ज़ बेबाक येह कलिमा ए'लान के साथ कहते हैं और नहीं शरमाते, कुफ़्फ़ार येह मक़ूला कहते वक़्त जानते थे कि उन की बात किसी के दिल में जमेगी नहीं क्यूं कि लोग रात दिन मो'जिज़ात देखते हैं वोह किस त़रह़ बावर कर सकेंगे कि हुज़ूर हमारी त़रह़ बशर हैं इस लिये उन्हों ने मो'जिज़ात को जादू बता दिया और कहा **7 :** उस से कोई चीज़ छुप नहीं सकती ख़्वाह कितने ही पर्दे और राज़ में रखी गई हो उन का राज़ भी इस में ज़ाहिर फ़रमा दिया। इस के बा'द क़ुरआने करीम से उन्हें सख़्त परेशानी व ह़ैरानी लाह़िक़ थी कि उस का किस त़रह़ इन्कार करें, वोह ऐसा बय्यिन मो'जिज़ा है जिस ने तमाम मुल्क के मायानाज़ माहिरों को आ़जिज़ व मुतह़य्यिर कर दिया है और वोह इस की दो चार आयतों की मिस्ल कलाम बना कर नहीं ला सके, इस परेशानी में उन्हों ने क़ुरआने करीम की निस्बत मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बातें कहीं जिन का बयान अगली आयत में है।

www.dawateislami.net

اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚۖ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَاۤ اُرْسِلَ

ख़्वाबें हैं[8] बल्कि इन की गढ़त [घड़ी हुई चीज़] है[9] बल्कि येह शाइर हैं[10] तो हमारे पास कोई निशानी लाएं जैसे

الْاَوَّلُوْنَ ۝٥ مَاۤ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

अगले भेजे गए थे[11] इन से पहले कोई बस्ती ईमान न लाई जिसे हम ने हलाक किया तो क्या येह ईमान लाएंगे[12]

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْۤ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ

और हम ने तुम से पहले न भेजे मगर मर्द जिन्हें हम वह्य करते[13] तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो

اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ

अगर तुम्हें इ़ल्म न हो[14] और हम ने उन्हें[15] ख़ाली बदन न बनाया कि खाना न खाएं[16] और

مَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَ

न वोह दुन्या में हमेशा रहें फिर हम ने अपना वा'दा उन्हें सच्चा कर दिखाया[17] तो उन्हें नजात दी और जिन को चाही[18] और

اَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا

ह़द से बढ़ने वालों को[19] हलाक कर दिया बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़[20] एक किताब उतारी जिस में तुम्हारी नामवरी है[21] तो क्या

تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ ع وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا ع

तुम्हें अ़क़्ल नहीं[22] और कितनी ही बस्तियां हम ने तबाह कर दीं कि वोह सितमगार थीं[23] और उन के बा'द

8 : उन को नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم वह्ये इलाही समझ गए हैं। कुफ़्फ़ार ने येह कह कर सोचा कि येह बात चस्पां नहीं हो सकेगी तो अब उस को छोड़ कर कहने लगे **9 :** येह कह कर ख़याल हुवा कि लोग कहेंगे कि अगर येह कलाम ह़ज़रत का बनाया हुवा है और तुम उन्हें अपने मिस्ल बशर भी कहते हो तो तुम ऐसा कलाम क्यूं नहीं बना सकते। येह ख़याल कर के इस बात को भी छोड़ा और कहने लगे **10 :** और येह कलाम शे'र है। इसी त़रह़ की बातें बनाते रहे, किसी एक बात पर क़ाइम न रह सके और अहले बात़िल कज़्ज़ाबों का येही ह़ाल होता है। अब इन्हों ने समझा कि इन बातों में से कोई बात भी चलने वाली नहीं है तो कहने लगे **11 :** इस के रद व जवाब में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है **12 :** मा'ना येह हैं कि इन से पहले लोगों के पास जो निशानियां आईं तो वोह उन पर ईमान न लाए और उन की तक्ज़ीब करने लगे और इस सबब से हलाक कर दिये गए तो क्या येह लोग निशानी देख कर ईमान ले आएंगे बा वुजूदे कि इन की सरकशी उन से बढ़ी हुई है। **13 :** येह उन के कलामे साबिक़ का रद है कि अम्बिया का सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमाना नुबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं, हमेशा ऐसा ही होता रहा है। **14 :** क्यूं कि ना वाक़िफ़ को इस से चारा ही नहीं कि वाक़िफ़ से दरयाफ़्त करे और मरज़े जह्ल का इ़लाज येही है कि आ़लिम से सुवाल करे और उस के हुक्म पर अ़मिल हो। **मस्अला :** इस आयत से तक़्लीद का वुजूब साबित होता है। यहां उन्हें इ़ल्म वालों से पूछने का हुक्म दिया गया कि उन से दरयाफ़्त करो कि **अल्लाह** के रसूल सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमा हुए थे या नहीं ? इस से तुम्हारे तरद्दुद का ख़ातिमा हो जाएगा। **15 :** या'नी अम्बिया को **16 :** तो उन पर खाने पीने का ए'तिराज़ करना और येह कहना कि ''مَا لِهٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ'' मह़ज़ बेजा है, तमाम अम्बिया का येही ह़ाल था, वोह सब खाते भी थे पीते भी थे। **17 :** उन के दुश्मनों को हलाक करने और उन्हें नजात देने का। **18 :** या'नी ईमानदारों को जिन्हों ने अम्बिया की तस्दीक़ की। **19 :** जो अम्बिया की तक्ज़ीब करते थे। **20 :** ऐ गुरौहे क़ुरैश **21 :** अगर तुम इस पर अ़मल करो या येह मा'ना हैं कि वोह किताब तुम्हारी ज़बान में है या येह कि इस में तुम्हारे लिये नसीह़त है या येह कि इस में तुम्हारे दीनी और दुन्यवी उमूर और ह़वाइज का बयान है **22 :** कि ईमान ला कर इस इ़ज़्ज़तो करामत और सआ़दत को ह़ासिल करो। **23 :** या'नी काफ़िर थीं।

قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾ لَا

और क़ौम पैदा की तो जब उन्हों ने[24] हमारा अ़ज़ाब पाया जभी वोह उस से भागने लगे[25] न

تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾

भागो और लौट के जाओ उन आसाइशों की त़रफ़ जो तुम को दी गई थीं और अपने मकानों की त़रफ़ शायद तुम से पूछना हो[26]

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى

बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम ज़ालिम थे[27] तो वोह येही पुकारते रहे यहां तक

جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا

कि हम ने उन्हें कर दिया काटे हुए[28] बुझे हुए और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ

بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّا تَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ

इन के दरमियान है अ़बस न बनाए[29] अगर हम कोई बहलावा इख़्तियार करना चाहते[30] तो अपने पास से इख़्तियार करते

اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا

अगर हमें करना होता[31] बल्कि हम ह़क़ को बात़िल पर फेंक मारते हैं तो वोह उस का भेजा निकाल देता है तो जभी

هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ

वोह मिट कर रह जाता है[32] और तुम्हारी ख़राबी है[33] उन बातों से जो बनाते हो[34] और उसी के हैं जितने आस्मानों और

الْاَرْضِ ۭ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

ज़मीन में हैं[35] और उस के पास वाले[36] उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और न थकें

24 : या'नी उन ज़ालिमों ने **25 शाने नुज़ूल :** मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है कि सर ज़मीने यमन में एक बस्ती है जिस का नाम "हुसूर" है वहां के रहने वाले अ़रब थे, उन्हों ने अपने नबी की तक्ज़ीब की और उन को क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर बुख़्त नस्सर को मुसल्लत़ किया उस ने उन्हें क़त्ल किया और गिरिफ़्तार किया और उस का येह अ़मल जारी रहा, तो येह लोग बस्ती छोड़ कर भागे तो मलाएका ने उन से ब त़रीक़े त़न्ज़ कहा (जो अगली आयत में है) **26 :** कि तुम पर क्या गुज़री और तुम्हारे अम्वाल क्या हुए तो तुम दरयाफ़्त करने वाले को अपने इल्मो मुशाहदे से जवाब दे सको। **27 :** अ़ज़ाब देखने के बा'द उन्हों ने गुनाह का इक़्रार किया और नादिम हुए, इस लिये येह ए'तिराफ़ उन्हें काम न आया **28 :** खेत की त़रह़ कि तलवारों से टुकड़े टुकड़े कर दिये गए और बुझी हुई आग की त़रह़ हो गए। **29 :** कि इन से कोई फ़ाएदा न हो बल्कि इस में हमारी हिक्मतें हैं, मिन जुम्ला इन के येह है कि हमारे बन्दे इन से हमारी क़ुदरत व हिक्मत पर इस्तिद्लाल करें और उन्हें हमारे औसाफ़ व कमाल की मा'रिफ़त हो **30 :** मिस्ल ज़न व फ़रज़न्द के, जैसा कि नसारा कहते हैं और हमारे लिये बीबी और बेटियां बताते हैं, अगर येह हमारे ह़क़ में मुम्किन होता **31 :** क्यूं कि ज़न व फ़रज़न्द वाले ज़न व फ़रज़न्द अपने पास रखते हैं मगर हम इस से पाक हैं, हमारे लिये येह मुम्किन ही नहीं **32 :** मा'ना येह हैं कि हम अहले बात़िल के किज़्ब को बयाने ह़क़ से मिटा देते हैं **33 :** ऐ कुफ़्फ़ारे ना बकार **34 :** शाने इलाही में कि उस के लिये बीवी व बच्चा ठहराते हो। **35 :** वोह सब का मालिक है और सब उस के मम्लूक, तो कोई उस की औलाद कैसे हो सकता है ? मम्लूक होने और औलाद होने में मुनाफ़ात है। **36 :** उस के मुक़र्रबीन जिन्हें उस के करम से उस के हुज़ूर क़ुर्बो मन्ज़िलत ह़ासिल है।

www.dawateislami.net

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ

रात दिन उस की पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते[37] क्या उन्हों ने ज़मीन में से कुछ ऐसे ख़ुदा

الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ

बना लिये हैं[38] कि वोह कुछ पैदा करते हैं[39] अगर आस्मान व ज़मीन में अल्लाह के सिवा और ख़ुदा होते तो ज़रूर वोह[40] तबाह हो जाते[41]

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ

तो पाकी है अल्लाह अ़र्श के मालिक को उन बातों से जो येह बनाते हैं[42] उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे[43]

وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ

और उन सब से सुवाल होगा[44] क्या अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना रखे हैं तुम फ़रमाओ[45] अपनी दलील लाओ[46]

هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ

येह क़ुरआन मेरे साथ वालों का ज़िक्र है[47] और मुझ से अगलों का तज़्किरा[48] बल्कि उन में अक्सर हक़ को नहीं जानते

فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ

तो वोह रू गर्दां हैं[49] और हम ने तुम से पहले कोई रसूल न भेजा मगर येह कि हम उस की तरफ़

37 : हर वक़्त उस की तस्बीह़ में रहते हैं। ह़ज़रते का'ब अह़बार ने फ़रमाया कि मलाएका के लिये तस्बीह़ ऐसी है जैसी कि बनी आदम के लिये सांस लेना। **38 :** जवाहिरे अर्ज़िया से मिस्ल सोने चांदी पथ्थर वग़ैरा के **39 :** ऐसा तो नहीं है और न येह हो सकता है कि जो ख़ुद बेजान हो वोह किसी को जान दे सके, तो फिर उस को मा'बूद ठहराना और इलाह क़रार देना कितना खुला बात़िल है, इलाह वोही है जो हर मुम्किन पर क़ादिर हो, जो क़ादिर नहीं वोह इलाह कैसा। **40 :** आस्मान व ज़मीन **41 :** क्यूं कि अगर ख़ुदा से वोह ख़ुदा मुराद लिये जाएं जिन की ख़ुदाई के बुत परस्त मो'तक़िद हैं तो फ़सादे आ़लम का लुज़ूम ज़ाहिर है क्यूं कि वोह जमादात हैं तदबीरे आ़लम पर अस्लन क़ुदरत नहीं रखते, और अगर ता'मीम की जाए तो भी लुज़ूमे फ़साद यक़ीनी है क्यूं कि अगर दो ख़ुदा फ़र्ज़ किये जाएं तो दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या वोह दोनों मुत्तफ़िक़ होंगे या मुख़्तलिफ़, अगर शै वाह़िद पर मुत्तफ़िक़ हुए तो लाज़िम आएगा कि एक चीज़ दोनों की मक़्दूर हो और दोनों की क़ुदरत से वाक़ेअ़ हो येह मुह़ाल है और अगर मुख़्तलिफ़ हुए तो एक शै के मुतअ़ल्लिक़ दोनों के इरादे या मअ़न वाक़ेअ़ होंगे और एक ही वक़्त में वोह मौजूद व मा'दूम दोनों हो जाएगी या दोनों के इरादे वाक़ेअ़ न हों और शै न मौजूद हो न मा'दूम या एक का इरादा वाक़ेअ़ हो दूसरे का वाक़ेअ़ न हो, येह तमाम सूरतें मुह़ाल हैं तो साबित हुवा कि फ़साद हर तक़्दीर पर लाज़िम है, तौह़ीद की येह निहायत क़वी बुरहान है और इस की तक़्रीरें बहुत बस्त के साथ अइम्मए कलाम की किताबों में मज़्कूर हैं, यहां इख़्तिसारन इसी क़दर पर इक्तिफ़ा किया गया। (تفسیر کبیر وغیرہ) **42 :** कि उस के लिये औलाद व शरीक ठहराते हैं। **43 :** क्यूं कि वोह मालिके ह़क़ीक़ी है जो चाहे करे जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत दे जिसे चाहे सआ़दत दे जिसे चाहे शक़ी करे, वोह सब का ह़ाकिम है, कोई उस का ह़ाकिम नहीं जो उस से पूछ सके **44 :** क्यूं कि सब उस के बन्दे हैं मम्लूक हैं, सब पर उस की फ़रमां बरदारी और इत़ाअ़त लाज़िम है, इस से तौह़ीद की एक और दलील मुस्तफ़ाद होती है, जब सब मम्लूक हैं तो उन में से कोई ख़ुदा कैसे हो सकता है ? इस के बा'द ब त़रीक़े इस्तिफ़हाम तौबीख़न फ़रमाया **45 :** ऐ ह़बीब ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) इन मुश्रिकीन से कि तुम अपने इस बात़िल दा'वे पर **46 :** और हुज्जत क़ाइम करो ख़्वाह अ़क़्ली हो या नक़्ली, मगर न कोई दलीले अ़क़्ली ला सकते हो जैसा कि बराहीने मज़्कूरा से ज़ाहिर हो चुका और न कोई दलीले नक़्ली पेश कर सकते हो क्यूं कि तमाम कुतुबे समाविया में अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद का बयान है और सब में शिर्क का इब्त़ाल किया गया है। **47 :** साथ वालों से मुराद आप की उम्मत है। क़ुरआने करीम में इस का ज़िक्र है कि इस को त़ाअ़त पर क्या सवाब मिलेगा और मा'सियत पर क्या अ़ज़ाब किया जाएगा। **48 :** या'नी पहले अम्बिया की उम्मतों का और इस का कि दुन्या में उन के साथ क्या किया गया और आख़िरत में क्या किया जाएगा। **49 :** और ग़ौरो तअम्मुल नहीं करते और नहीं सोचते कि तौह़ीद पर ईमान लाना उन के लिये ज़रूरी है।

www.dawateislami.net

اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿۲۵﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا

वह्य फ़रमाते कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मुझी को पूजो और बोले रहमान ने बेटा इख़्तियार किया[50]

سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَ هُمْ بِاَمْرِهٖ

पाक है वोह[51] बल्कि बन्दे हैं इ़ज़्ज़त वाले[52] बात में उस से सब्क़त नहीं करते और वोह उसी के हुक्म पर

يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ لَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا

कारबन्द होते हैं वोह जानता है जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है[53] और शफ़ाअ़त नहीं करते मगर

لِمَنِ ارْتَضٰى وَ هُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَ مَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّیْۤ

उस के लिये जिसे वोह पसन्द फ़रमाए[54] और वोह उस के ख़ौफ़ से डर रहे हैं और उन में जो कोई कहे कि मैं

ع ۲/۱۹/۲ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾ ع

अल्लाह के सिवा मा'बूद हूं[55] तो उसे हम जहन्नम की जज़ा देंगे हम ऐसी ही सज़ा देते हैं सितमगारों को

اَوَ لَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا

क्या काफ़िरों ने येह ख़याल न किया कि आस्मान और ज़मीन बन्द थे

فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَ جَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَیْءٍ حَیٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ

तो हम ने उन्हें खोला[56] और हम ने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई[57] तो क्या वोह ईमान न लाएंगे और

جَعَلْنَا فِی الْاَرْضِ رَوَاسِیَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۪ وَ جَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا

ज़मीन में हम ने लंगर डाले[58] कि उन्हें ले कर न कांपे और हम ने उस में कुशादा राहें रखीं

لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَ جَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّ هُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا

कि कहीं वोह राह पाएं[59] और हम ने आस्मान को छत बनाया निगाह रखी गई[60] और वोह[61] उस की निशानियों

50 शाने नुज़ूल : येह आयत ख़ुज़ाआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां कहा था। **51 :** उस की ज़ात इस से मुनज़्ज़ा है कि उस के औलाद हो। **52 :** या'नी फ़िरिश्ते उस के बरगुज़ीदा और मुकर्रम बन्दे हैं। **53 :** या'नी जो कुछ उन्हों ने किया और जो कुछ वोह आयिन्दा करेंगे। **54 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया या'नी जो तौह़ीद का क़ाइल हो। **55 :** येह कहने वाला इब्लीस है जो अपनी इ़बादत की दा'वत देता है, फ़िरिश्तों में कोई ऐसा नहीं जो येह कलिमा कहे। **56 :** बन्द होना या तो येह है कि एक दूसरे से मिला हुवा था उन में फ़स्ल पैदा कर के उन्हें खोला या येह मा'ना हैं कि आस्मान बन्द था ब ईं मा'ना कि उस से बारिश नहीं होती थी, ज़मीन बन्द थी ब ईं मा'ना कि उस से रूईदगी पैदा नहीं होती थी, तो आस्मान का खोलना येह है कि उस से बारिश होने लगी और ज़मीन का खोलना येह है कि उस से सब्ज़ा पैदा होने लगा। **57 :** या'नी पानी को जानदारों की ह़यात का सबब किया, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा मा'ना येह हैं कि हर जानदार पानी से पैदा किया हुवा है और बा'ज़ों ने कहा इस से नुत़्फ़ा मुराद है। **58 :** मज़बूत़ पहाड़ों के **59 :** अपने सफ़रों में और जिन मक़ामात का क़स्द करें वहां तक पहुंच सकें। **60 :** गिरने से। **61 :** या'नी कुफ़्फ़ार।

www.dawateislami.net

مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

से रू गर्दां हैं[62] और वोही है जिस ने बनाए रात[63] और दिन[64] और सूरज और चांद

كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ

हर एक एक घेरे में पैर (तैर) रहा है[65] और हम ने तुम से पहले किसी आदमी के लिये दुन्या में हमेशगी न बनाई[66]

اَفَاْىِٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآىِٕقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ

तो क्या अगर तुम इन्तिक़ाल फ़रमाओ तो येह हमेशा रहेंगे[67] हर जान को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हारी आज़्माइश करते हैं

بِالشَّرِّ وَالْخَیْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَیْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِیْنَ

बुराई और भलाई से[68] जांचने को[69] और हमारी ही त़रफ़ तुम्हें लौट कर आना है[70] और जब काफ़िर तुम्हें

كَفَرُوْۤا اِنْ یَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِیْ یَذْكُرُ

देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्ठा (मज़ाक़)[71] क्या येह हैं वोह जो तुम्हारे ख़ुदाओं को

اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ

बुरा कहते हैं और वोह[72] रह़मान ही की याद से मुन्किर हैं[73] आदमी जल्द बाज़

عَجَلٍ ؕ سَاُوْرِیْكُمْ اٰیٰتِیْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾ وَیَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا

बनाया गया अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा मुझ से जल्दी न करो[74] और कहते हैं कब होगा

62 : या'नी आस्मानी काएनात सूरज, चांद, सितारे और अपने अपने अफ़्लाक में इन की ह़रकतों की कैफ़िय्यत और अपने अपने मत़ालेअ़ से इन के तुलूअ़ और ग़ुरूब और इन के अ़जाइबे अह़वाल जो सानेए़ आ़लम (या'नी **अल्लाह** तआ़ला) के वुजूद और उस की वह़दत और उस के कमाले क़ुदरत व ह़िक्मत पर दलालत करते हैं, कुफ़्फ़ार इन सब से ए'राज़ करते हैं और इन दलाइल से फ़ाएदा नहीं उठाते। **63 :** तारीक कि इस में आराम करें **64 :** रोशन कि इस में मआ़श (रोज़ी कमाने) वग़ैरा के काम अन्जाम दें। **65 :** जिस त़रह़ कि तैराक पानी में। **66 शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दुश्मन अपने ज़लाल व इ़नाद (गुमराही व दुश्मनी) से कहते थे कि हम ह़वादिसे ज़माना का इन्तिज़ार कर रहे हैं अ़न्क़रीब ऐसा वक़्त आने वाला है कि ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की वफ़ात हो जाएगी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि दुश्मनाने रसूल के लिये येह कोई ख़ुशी की बात नहीं, हम ने दुन्या में किसी आदमी के लिये हमेशगी नहीं रखी **67 :** और इन्हें मौत के पन्जे से रिहाई मिल जाएगी, जब ऐसा नहीं है तो फिर ख़ुश किस बात पर होते हैं ? ह़क़ीक़त येह है कि **68 :** या'नी राह़त व तक्लीफ़, तन्दुरुस्ती व बीमारी, दौलत मन्दी व नादारी, नफ़्अ़ और नुक़्सान से **69 :** ताकि ज़ाहिर हो जाए कि सब्रो शुक्र में तुम्हारा क्या दरजा है। **70 :** हम तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा देंगे। **71 शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल के ह़क़ में नाज़िल हुई, हुज़ूर तशरीफ़ लिये जाते थे, वोह आप को देख कर हंसा और कहने लगा कि येह बनी अ़ब्दे मनाफ़ के नबी हैं, और आपस में एक दूसरे से कहने लगे **72 :** कुफ़्फ़ार **73 :** कहते हैं कि हम रह़मान को जानते ही नहीं, इस जह्ल व ज़लाल में मुब्तला होने के बा वुजूद आप के साथ तमस्ख़ुर करते हैं और नहीं देखते कि हंसी के क़ाबिल ख़ुद उन का अपना ह़ाल है। **74 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई जो कहता था कि जल्द अ़ज़ाब नाज़िल कराइये। इस आयत में फ़रमाया गया कि अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा या'नी जो वा'दे अ़ज़ाब के दिये गए हैं उन का वक़्त क़रीब आ गया है, चुनान्चे रोज़े बद्र वोह मन्ज़र उन की नज़र के सामने आ गया।

www.dawateislami.net

الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۸﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ

येह वा'दा[75] अगर तुम सच्चे हो किसी त़रह़ जानते काफ़िर उस वक़्त को जब न रोक सकेंगे

عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَ لَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۳۹﴾ بَلْ

अपने मूंहों से आग[76] और न अपनी पीठों से और न उन की मदद हो[77] बल्कि

تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَ لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَ

वोह उन पर अचानक आ पड़ेगी[78] तो उन्हें बे ह़वास कर देगी फिर न वोह उसे फेर सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी[79] और

لَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا

बेशक तुम से अगले रसूलों के साथ ठठ्ठा किया गया[80] तो मस्ख़रगी (ठठ्ठा) करने वालों

كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۴۱﴾ ع قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ مِنَ

का ठठ्ठा उन्ही को ले बैठा[81] तुम फ़रमाओ शबाना रोज़ तुम्हारी कौन निगहबानी करता है

الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۲﴾ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ

रह़मान से[82] बल्कि वोह अपने रब की याद से मुंह फेरे हैं[83] क्या उन के कुछ ख़ुदा हैं[84]

تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَ لَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿۴۳﴾

जो उन को हम से बचाते हैं[85] वोह अपनी ही जानों को नहीं बचा सकते[86] और न हमारी त़रफ़ से उन की यारी हो

بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا

बल्कि हम ने उन को[87] और उन के बाप दादा को बरतावा दिया[88] यहां तक कि ज़िन्दगी उन पर दराज़ हुई[89] तो क्या नहीं देखते कि हम[90]

نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ

ज़मीन को उस के किनारों से घटाते आ रहे हैं[91] तो क्या येह ग़ालिब होंगे[92] तुम फ़रमाओ कि मैं

---

75 : अ़ज़ाब का या क़ियामत का, येह उन के इस्ति'जाल (जल्दी अ़ज़ाब मांगने) का बयान है। **76** : दोज़ख़ की **77** : अगर वोह येह जानते होते तो कुफ़्र पर क़ाइम न रहते और अ़ज़ाब में जल्दी न करते **78** : क़ियामत **79** : तौबा व मा'ज़िरत की **80** : ऐ सय्यिदे आ़लम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **81** : और वोह अपने इस्तिहज़ा और मस्ख़रगी के वबाल व अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए। इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली फ़रमाई गई कि आप के साथ इस्तिहज़ा करने वालों का भी येही अन्जाम होना है। **82** : या'नी उस के अ़ज़ाब से **83** : जब ऐसा है तो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही का क्या ख़ौफ़ हो और वोह अपनी ह़िफ़ाज़त करने वाले को क्या पहचानें। **84** : हमारे सिवा उन के ख़याल में **85** : और हमारे अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखते हैं ऐसा तो नहीं है और अगर वोह अपने बुतों की निस्बत येह ए'तिक़ाद रखते हैं तो उन का ह़ाल येह है कि **86** : अपने पूजने वालों को क्या बचा सकेंगे। **87** : या'नी कुफ़्फ़ार को **88** : और दुन्या में उन्हें ने'मत व मोहलत दी **89** : और वोह इस से और मग़रूर हुए और उन्हों ने गुमान किया कि वोह हमेशा ऐसे ही रहेंगे। **90** : कुफ़्रिस्तान की **91** : रोज़ बरोज़ मुसल्मानों को इस पर तसल्लुत़ दे रहे हैं और एक शहर के बा'द दूसरा शहर फ़त्ह़ होता चला आ रहा है, ह़ुदूदे इस्लाम बढ़ रही हैं और सर ज़मीने कुफ़्र घटती

www.dawateislami.net

اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ

तुम को सिर्फ़ वह्य से डराता हूं[93] और बहरे पुकारना नहीं सुनते जब डराए जाएं[94] और

لَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا

अगर उन्हें तुम्हारे रब के अ़ज़ाब की हवा छू जाए तो ज़रूर कहेंगे हाए ख़राबी हमारी बेशक हम

ظٰلِمِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ

ज़ालिम थे[95] और हम अ़द्ल की तराज़ूएं रखेंगे क़ियामत के दिन तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म

شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا

न होगा और अगर कोई चीज़[96] राई के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे और हम काफ़ी हैं

حٰسِبِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا

हिसाब को और बेशक हम ने मूसा और हारून को फ़ैसला दिया[97] और उजाला[98] और परहेज़ गारों

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۸﴾ لا الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ

को नसीहत[99] वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और उन्हें क़ियामत का अन्देशा

مُشْفِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع

लगा हुवा है और येह है बरकत वाला ज़िक्र कि हम ने उतारा[100] तो क्या तुम इस के मुन्किर हो

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾ ج اِذْ قَالَ

और बेशक हम ने इब्राहीम को[101] पहले ही से उस की नेक राह अ़ता कर दी और हम उस से ख़बरदार थे[102] जब उस ने अपने

لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا

बाप और क़ौम से कहा येह मूरतें क्या हैं[103] जिन के आगे तुम आसन मारे (जम कर बैठे) हो[104] बोले

चली आती है और हवालिये मक्कए मुकर्रमा (मक्कए मुकर्रमा के गिर्दो नवाह) पर मुसल्मानों का तसल्लुत़ होता जाता है। क्या मुश्रिकीन जो अ़ज़ाब त़लब करने में जल्दी करते हैं इस को नहीं देखते और इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। **92 :** जिन के क़ब्ज़े से ज़मीन दम ब दम निकलती जा रही है या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के अस्ह़ाब जो ब फ़ज़्ले इलाही फ़त्ह़ पर फ़त्ह़ पा रहे हैं और उन के मक्बूज़ात दम ब दम बढ़ते चले जाते हैं। **93 :** और अ़ज़ाबे इलाही का उसी की त़रफ़ से ख़ौफ़ दिलाता हूं। **94 :** या'नी काफ़िर हिदायत करने वाले और ख़ौफ़ दिलाने वाले के कलाम से नफ़्अ़ न उठाने में बहरे की त़रह़ हैं। **95 :** नबी की बात पर कान न रखा और उन पर ईमान न लाए। **96 :** आ'माल में से **97 :** या'नी तौरैत अ़त़ा की जो ह़क़ व बात़िल में तफ़्रिक़ा (इम्तियाज़) करने वाली है। **98 :** या'नी रोशनी है कि इस से नजात की राह मा'लूम होती है। **99 :** जिस से वोह पन्द पज़ीर (फ़ाइदा उठाते) होते हैं और दीनी उमूर का इ़ल्म ह़ासिल करते हैं **100 :** अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर या'नी क़ुरआने पाक। येह कसीरुल ख़ैर (ख़ैर ही ख़ैर) है और ईमान लाने वालों के लिये इस में बड़ी बरकतें हैं। **101 :** उन की इब्तिदाई उ़म्र में बालिग़ होने के **102 :** कि वोह हिदायत व नुबुव्वत के अह्ल हैं। **103 :** या'नी बुत, जो दरिन्दों परिन्दों

www.dawateislami.net

وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ

हम ने अपने बाप दादा को इन की पूजा करते पाया[105] कहा बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा सब

ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ

खुली गुमराही में हो बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो या यूंही खेलते हो[106] कहा

بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ

बल्कि तुम्हारा रब वोह है जो रब है आस्मानों और ज़मीन का जिस ने इन्हें पैदा किया और मैं इस पर गवाहों

مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا

में से हूं और मुझे अल्लाह की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा बा'द इस के कि तुम फिर जाओ

مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

पीठ दे कर[107] तो उन सब को[108] चूरा कर दिया मगर एक को जो उन सब का बड़ा था[109] कि शायद वोह उस से कुछ पूछें[110]

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا سَمِعْنَا

बोले किस ने हमारे ख़ुदाओं के साथ येह काम किया बेशक वोह ज़ालिम है उन में के कुछ बोले हम

فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ

ने एक जवान को इन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं[111] बोले तो उसे लोगों के सामने लाओ

और इन्सानों की सूरतों के बने हुए हैं **104 :** और इन की इबादत में मश्ग़ूल हो। **105 :** तो हम भी उन की इक़्तिदा में वैसा ही करने लगे। **106 :** चूंकि उन्हें अपने त़रीक़े का गुमराही होना बहुत ही बईद मा'लूम होता था और उस का इन्कार करना वोह बहुत बड़ी बात जानते थे, इस लिये उन्हों ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से येह कहा कि क्या आप येह बात वाक़ेई त़ौर पर हमें बता रहे हैं या ब त़रीक़ खेल के फ़रमाते हैं ? इस के जवाब में आप ने ह़ज़रते मलिक अ़ल्लाम (या'नी अल्लाह तआ़ला) की रबूबिय्यत का इस्बात फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप खेल के त़रीक़े पर कलाम फ़रमाने वाले नहीं हैं बल्कि ह़क़ का इज़्हार फ़रमाते हैं चुनान्चे, आप ने **107 :** अपने मेले को। वाक़िआ़ येह है कि उस क़ौम का सालाना एक मेला लगता था, जंगल में जाते थे और शाम तक वहां लह्वो लअ़ब में मश्ग़ूल रहते थे, वापसी के वक़्त बुतख़ाने में आते थे और बुतों की पूजा करते थे, इस के बा'द अपने मकानों को वापस जाते थे, जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की एक जमाअ़त से बुतों के मुतअ़ल्लिक़ मुनाज़रा किया तो उन लोगों ने कहा कि कल को हमारी ईद है, आप वहां चलें देखें कि हमारे दीन और त़रीक़े में क्या बहार हैं और कैसे लुत़्फ़ आते हैं, जब वोह मेले का दिन आया और आप से मेले में चलने को कहा गया तो आप उ़ज़्र कर के रह गए, वोह लोग रवाना हो गए, जब उन के बाक़ी मांदा और कमज़ोर लोग जो आहिस्ता आहिस्ता जा रहे थे गुज़रे तो आप ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा, इस को बा'ज़ लोगों ने सुना और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام बुतख़ाने की त़रफ़ लौटे। **108 :** या'नी बुतों को तोड़ कर **109 :** छोड़ दिया और बसूला उस के कांधे पर रख दिया **110 :** या'नी बड़े बुत से कि इन छोटे बुतों का क्या ह़ाल है ? येह क्यूं टूटे और बसूला तेरी गरदन पर कैसा रखा है ? और उन्हें उस का इज़्ज़ ज़ाहिर हो और उन्हें होश आए कि ऐसे आ़जिज़ ख़ुदा नहीं हो सकते या येह मा'ना हैं कि वोह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त करें और आप को हुज्जत क़ाइम करने का मौक़अ़ मिले, चुनान्चे जब क़ौम के लोग शाम को वापस हुए और बुतख़ाने में पहुंचे और उन्हों ने देखा कि बुत टूटे पड़े हैं तो **111 :** येह ख़बर नमरूद जब्बार और उस के उमरा को पहुंची तो।

www.dawateislami.net

لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿۶۱﴾ قَالُوْۤا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿۶۲﴾ ط

शायद वोह गवाही दें[112] बोले क्या तुम ने हमारे ख़ुदाओं के साथ येह काम किया ऐ इब्राहीम[113]

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖۗ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿۶۳﴾

फ़रमाया बल्कि इन के उस बड़े ने किया होगा[114] तो उन से पूछो अगर बोलते हों[115]

فَرَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْۤا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۶۴﴾ لا ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى

तो अपने जी की त़रफ़ पलटे[116] और बोले बेशक तुम्हीं सितमगार हो[117] फिर अपने सरों के बल

رُءُوْسِهِمْ ج لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰۤؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿۶۵﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ

औंधाए गए[118] कि तुम्हें ख़ूब मा'लूम है येह बोलते नहीं[119] कहा तो क्या **अल्लाह** के सिवा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَا يَضُرُّكُمْ ﴿۶۶﴾ ط اُفٍّ لَّكُمْ وَ لِمَا

ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़्अ़ दे[120] और न नुक़्सान पहुंचाए[121] तुफ़ है तुम पर और इन

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَ انْصُرُوْۤا

बुतों पर जिन को **अल्लाह** के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[122] बोले इन को जला दो और अपने ख़ुदाओं

اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿۶۸﴾ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى

की मदद करो अगर तुम्हें करना है[123] हम ने फ़रमाया ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती

112 : कि येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ही का फ़े'ल है या इन से बुतों की निस्बत ऐसा कलाम सुना गया है, मुद्दआ येह था कि शहादत क़ाइम हो तो वोह आप के दरपै हों, चुनान्चे ह़ज़रत बुलाए गए और वोह लोग 113 : आप ने इस का तो कुछ जवाब न दिया और शाने मुनाज़राना से ता'रीज़ के तौ़र पर एक अ़जीबो ग़रीब हुज्जत क़ाइम की। 114 : इस गुस्से से कि इस के होते तुम इस के छोटों को पूजते हो, इस के कन्धे पर बसूला होने से ऐसा ही क़ियास किया जा सकता है, मुझ से क्या पूछना, पूछना हो 115 : वोह ख़ुद बताएं कि उन के साथ येह किस ने किया, मुद्दआ येह था कि क़ौम ग़ौर करे कि जो बोल नहीं सकता जो कुछ कर नहीं सकता वोह ख़ुदा नहीं हो सकता उस की ख़ुदाई का ए'तिक़ाद बातिल है, चुनान्चे जब आप ने येह फ़रमाया 116 : और समझे कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ह़क़ पर हैं 117 : जो ऐसे मजबूरों और बे इख़्तियारों को पूजते हो, जो अपने कांधे से बसूला न हटा सके वोह अपने पुजारी को मुसीबत से क्या बचा सके और उस के क्या काम आ सके। 118 : और कलिमए ह़क़ कहने के बा'द फिर उन की बद बख़्ती उन के सरों पर सुवार हुई और वोह कुफ़्र की त़रफ़ पलटे और बातिल मुजादला व मुकाबरा (बे जा बह़सो मुबाह़सा) शुरूअ़ किया और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे 119 : तो हम इन से कैसे पूछें और ऐ इब्राहीम तुम हमें इन से पूछने का कैसे हुक्म देते हो। 120 : अगर उसे पूजो 121 : अगर उस का पूजना मौक़ूफ़ कर दो। 122 : कि इतना भी समझ सको कि येह बुत पूजने के क़ाबिल नहीं। जब हुज्जत तमाम हो गई और वोह लोग जवाब से आ़जिज़ आए तो 123 : नमरूद और उस की क़ौम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को जला डालने पर मुत्तफ़िक़ हो गई और उन्हों ने आप को एक मकान में क़ैद कर दिया और क़र्यए कूसा में एक इमारत बनाई और एक महीने तक ब कोशिश तमाम क़िस्म क़िस्म की लकड़ियां जम्अ़ कीं और एक अ़ज़ीम आग जलाई जिस की तपिश से हवा में परवाज़ करने वाले परिन्दे जल जाते थे और एक मिन्जनीक़ (पथ्थर फेंकने की तोप) खड़ी की और आप को बांध कर उस में रख कर आग में फेंका, उस वक़्त आप की ज़बाने मुबारक पर था حَسْبِيَ اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ। जिब्रईले अमीन ने आप से अ़र्ज़ किया कि क्या कुछ काम है ? आप ने फ़रमाया : तुम से नहीं, जिब्रईल ने अ़र्ज़ किया : तो अपने रब से सुवाल कीजिये, फ़रमाया : सुवाल करने से उस का मेरे ह़ाल को जानना मेरे लिये किफ़ायत करता है।

اِبْرٰهِيْمَ ﴿۶۹﴾ وَ اَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿۷۰﴾ وَ نَجَّيْنٰهُ وَ

इब्राहीम पर[124] और उन्हों ने उस का बुरा चाहा तो हम ने उन्हें सब से बढ़ कर ज़ियांकार कर दिया[125] और हम ने उसे और

لُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۱﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ

लूत़ को[126] नजात बख़्शी[127] उस ज़मीन की त़रफ़[128] जिस में हम ने जहान वालों के लिये बरकत रखी[129] और हम ने उसे इस्ह़ाक़ अ़त़ा फ़रमाया[130]

وَ يَعْقُوْبَ نَافِلَةً وَ كُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿۷۲﴾ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ

और या'क़ूब पोता और हम ने उन सब को अपने क़ुर्बे ख़ास का सज़ावार (अहल) किया और हम ने उन्हें इमाम किया कि[131] हमारे हुक्म

بِاَمْرِنَا وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ اِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءَ

से बुलाते हैं और हम ने उन्हें वह़्य भेजी अच्छे काम करने और नमाज़ बरपा (क़ाइम) रखने और ज़कात

الزَّكٰوةِ وَ كَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿۷۳﴾ وَ لُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا وَّ نَجَّيْنٰهُ

देने की और वोह हमारी बन्दगी करते थे और लूत़ को हम ने हुकूमत और इ़ल्म दिया और उसे उस

مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓىِٕثَ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ

बस्ती से नजात बख़्शी जो गन्दे काम करती थी[132] बेशक वोह बुरे लोग

ع ۵ ۵ فٰسِقِيْنَ ﴿۷۴﴾ وَ اَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾ وَ نُوْحًا

बे हुक्म (ना फ़रमान) थे और हम ने उसे[133] अपनी रह़मत में दाख़िल किया बेशक वोह हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है और नूह़ को

اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ

जब उस से पहले उस ने हमें पुकारा तो हम ने उस की दुआ़ क़बूल की और उसे और उस के घर वालों को बड़ी सख़्ती से

الْعَظِيْمِ ﴿۷۶﴾ وَ نَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا اِنَّهُمْ كَانُوْا

नजात दी[134] और हम ने उन लोगों पर उस को मदद दी जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं बेशक वोह

124 : तो आग ने सिवा आप की बन्दिश के और कुछ न जलाया और आग की गरमी ज़ाइल हो गई और रोशनी बाक़ी रही। **125 :** कि उन की मुराद पूरी न हुई और सई नाकाम रही और **अल्लाह** तआ़ला ने उस क़ौम पर मच्छर भेजे जो उन के गोश्त खा गए और ख़ून पी गए और एक मच्छर नमरूद के दिमाग़ में घुस गया और उस की हलाकत का सबब हुवा। **126 :** जो उन के भतीजे उन के भाई हारान के फ़रज़न्द थे, नमरूद और उस की क़ौम से **127 :** और इराक़ से **128 :** रवाना किया **129 :** उस ज़मीन से ज़मीने शाम मुराद है, इस की बरकत येह है कि यहां कसरत से अम्बिया हुए और तमाम जहान में उन के दीनी बरकात पहुंचे और सर सब्ज़ी व शादाबी के ए'तिबार से भी येह ख़ित्ता दूसरे ख़ित्तों पर फ़ाइक़ है, यहां कसरत से नहरें हैं, पानी पाकीज़ा और ख़ुश गवार है, अश्जार व सिमार (दरख़्तों और फलों) की कसरत है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने मक़ामे फ़िलिस्त़ीन में नुज़ूल फ़रमाया और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने मुअ्तफ़िका में। **130 :** और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला से बेटे की दुआ़ की थी। **131 :** लोगों को हमारे दीन की त़रफ़ **132 :** उस बस्ती का नाम सदूम था **133 :** या'नी लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को **134 :** या'नी तूफ़ान से और तक्ज़ीबे अहले तुग़्यान (बाग़ी व सरकश की तक्ज़ीब) से।

www.dawateislami.net

قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي

बुरे लोग थे तो हम ने उन सब को डुबो दिया और दावूद और सुलैमान को याद करो जब खेती का एक झगड़ा चुकाते

الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾

(फ़ैसला करते) थे जब रात को उस में कुछ लोगों की बकरियां छूटीं[135] और हम उन के हुक्म के वक़्त हाज़िर थे

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ

हम ने वोह मुआमला सुलैमान को समझा दिया[136] और दोनों को हुकूमत और इल्म अता किया[137] और दावूद के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये

يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ

कि तस्बीह़ करते और परिन्दे[138] और येह हमारे काम थे और हम ने उसे तुम्हारा एक पहनावा बनाना सिखाया

لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ

कि तुम्हें तुम्हारी आंच से [ज़ख़्मी होने से] बचाए[139] तो क्या तुम शुक्र करोगे और सुलैमान के लिये तेज़ हवा

عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ

मुसख़्ख़र कर दी कि उस के हुक्म से चलती उस ज़मीन की त़रफ़ जिस में हम ने बरकत रखी[140] और हम को हर

شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾ وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا

चीज़ मा'लूम है और शैत़ानों में से वोह जो उस के लिये ग़ोत़ा लगाते[141] और इस के सिवा

135 : उन के साथ कोई चराने वाला न था, वोह खेती खा गईं, येह मुक़द्दमा ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के सामने पेश हुवा आप ने तज्वीज़ की, कि बकरियां खेती वाले को दे दी जाएं, बकरियों की क़ीमत खेती के नुक़्सान के बराबर थी। **136 :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के सामने जब येह मुआमला पेश हुवा तो आप ने फ़रमाया कि फ़रीक़ैन के लिये इस से ज़ियादा आसानी की शक्ल भी हो सकती है, उस वक़्त ह़ज़रत की उम्र शरीफ़ ग्यारह साल की थी, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने आप पर लाज़िम किया कि वोह सूरत बयान फ़रमाएं, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने येह तज्वीज़ पेश की, कि बकरी वाला काश्त करे और जब तक खेती उस ह़ालत को पहुंचे जिस ह़ालत में बकरियों ने खाई है उस वक़्त तक खेती वाला बकरियों के दूध वग़ैरा से नफ़्अ़ उठाए और खेती उस ह़ालत पर पहुंच जाने के बा'द खेती वाले को खेती दे दी जाए बकरी वाले को उस की बकरियां वापस कर दी जावें, येह तज्वीज़ ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने पसन्द फ़रमाई, इस मुआमले में येह दोनों हुक्म इज्तिहादी थे और उस शरीअ़त के मुत़ाबिक़ थे। हमारी शरीअ़त में हुक्म येह है कि अगर चराने वाला साथ न हो तो जानवर जो नुक़्सानात करे उस का ज़मान लाज़िम नहीं। मुजाहिद का क़ौल है कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने जो फ़ैसला किया था वोह उस मस्अले का हुक्म था और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने जो तज्वीज़ फ़रमाई येह सूरते सुल्ह़ थी। **137 :** वुजूहे इज्तिहाद व त़रीक़े अह़काम वग़ैरा का। **मस्अला :** जिन उ़लमा को इज्तिहाद की अहलिय्यत ह़ासिल हो उन्हें उन उमूर में इज्तिहाद का ह़क़ है जिस में वोह किताब व सुन्नत के हुक्म न पावें और अगर इज्तिहाद में ख़त़ा भी हो जावे तो भी उन पर मुआख़ज़ा नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया जब हुक्म करने वाला इज्तिहाद के साथ हुक्म करे और उस हुक्म में मुसीब हो तो उस के लिये दो अज्र हैं और अगर इज्तिहाद में ख़त़ा वाक़ेअ़ हो जाए तो एक अज्र। **138 :** पथ्थर और परिन्दे आप के साथ आप की मुवाफ़क़त में तस्बीह़ करते थे। **139 :** या'नी जंग में दुश्मन के मुक़ाबिल काम आए और वोह ज़िरह है, सब से पहले ज़िरह बनाने वाले ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام हैं। **140 :** इस ज़मीन से मुराद शाम है जो आप का मस्कन था। **141 :** दरिया की गहराई में दाख़िल हो कर समुन्दर की तह से आप के लिये जवाहिर निकाल कर लाते।

دُوۡنَ ذٰلِکَ ۚ وَ کُنَّا لَهُمۡ حٰفِظِيۡنَ ﴿۸۲﴾ وَ اَيُّوۡبَ اِذۡ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىۡ

और काम करते[142] और हम उन्हें रोके हुए थे[143] और अय्यूब को [याद करो] जब उस ने अपने रब को पुकारा[144] कि मुझे

مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنۡتَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۸۳﴾ ۚۖ فَاسۡتَجَبۡنَا لَهٗ فَكَشَفۡنَا مَا بِهٖ

तक्लीफ़ पहुंची और तू सब मेहर वालों से बढ़ कर मेहर वाला है तो हम ने उस की दुआ़ सुन ली तो हम ने दूर कर दी जो

مِنۡ ضُرٍّ وَّاٰتَيۡنٰهُ اَهۡلَهٗ وَمِثۡلَهُمۡ مَّعَهُمۡ رَحۡمَةً مِّنۡ عِنۡدِنَا وَذِكۡرٰى

तक्लीफ़ उसे थी[145] और हम ने उसे उस के घर वाले और उन के साथ इतने ही और अ़ता किये[146] अपने पास से रहमत फ़रमा कर और बन्दगी

لِلۡعٰبِدِيۡنَ ﴿۸۴﴾ وَاِسۡمٰعِيۡلَ وَاِدۡرِيۡسَ وَذَا الۡكِفۡلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيۡنَ ﴿۸۵﴾ ۚۖ

वालों के लिये नसीहत[147] और इस्माईल और इदरीस और ज़ुल किफ़्ल को [याद करो] वोह सब सब्र वाले थे[148]

وَاَدۡخَلۡنٰهُمۡ فِىۡ رَحۡمَتِنَا ؕ اِنَّهُمۡ مِّنَ الصّٰلِحِيۡنَ ﴿۸۶﴾ وَذَا النُّوۡنِ اِذۡ

और उन्हें हम ने अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वोह हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में हैं और ज़ुन्नून को [याद करो][149] जब

ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنۡ لَّنۡ نَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنۡ لَّاۤ

चला ग़ुस्से में भरा[150] तो गुमान किया कि हम उस पर तंगी न करेंगे[151] तो अंधेरियों में पुकारा[152] कोई

142 : अ़जीब अ़जीब सन्अ़तें, इमारतें, महल, बरतन, शीशे की चीज़ें, साबून वग़ैरा बनाना। **143 :** कि आप के हुक्म से बाहर न हों। **144 :** या'नी अपने रब से दुआ़ की। ह़ज़रते अय्यूब عَلَيۡهِ السَّلَام ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيۡهِ السَّلَام की औलाद में से हैं **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हर त़रह़ की ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं, हुस्ने सूरत भी कस्रते औलाद भी कसरते अम्वाल भी। **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इब्तिला में डाला और आप के फ़रज़न्द व औलाद मकान के गिरने से दब कर मर गए, तमाम जानवर जिस में हज़ारहा ऊंट हज़ारहा बकरियां थीं सब मर गए, तमाम खेतियां और बाग़ात बरबाद हो गए, कुछ भी बाक़ी न रहा और जब आप को उन चीज़ों के हलाक होने और ज़ाएअ़ होने की ख़बर दी जाती थी तो आप ह़म्दे इलाही बजा लाते थे और फ़रमाते थे : मेरा क्या है जिस का था उस ने लिया, जब तक मुझे दिया और मेरे पास रखा उस का शुक्र ही अदा नहीं हो सकता मैं उस की मरज़ी पर राज़ी हूं, फिर आप बीमार हुए, तमाम जिस्म शरीफ़ में आबले पड़े, बदन मुबारक सब का सब ज़ख़्मों से भर गया, सब लोगों ने छोड़ दिया बजुज़ आप की बीबी साहिबा के कि वोह आप की ख़िदमत करती रहीं और येह ह़ालत सालहा साल रही, आख़िरकार कोई ऐसा सबब पेश आया कि आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की : **145 :** इस त़रह़ कि ह़ज़रते अय्यूब عَلَيۡهِ السَّلَام से फ़रमाया कि आप ज़मीन में पाउं मारिये। उन्हों ने पाउं मारा एक चश्मा ज़ाहिर हुवा, हुक्म दिया गया इस से ग़ुस्ल कीजिये, ग़ुस्ल किया तो ज़ाहिर बदन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं। फिर आप चालीस क़दम चले फिर दोबारा ज़मीन में पाउं मारने का हुक्म हुवा फिर आप ने पाउं मारा उस से भी एक चश्मा ज़ाहिर हुवा जिस का पानी निहायत सर्द था, आप ने ब हुक्मे इलाही पिया उस से बात़िन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं और आप को आ'ला दरजे की सिह़्ह़त ह़ासिल हुई। **146 :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द व इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की तमाम औलाद को ज़िन्दा फ़रमा दिया और आप को उतनी ही औलाद और इनायत की। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا की दूसरी रिवायत में है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की बीबी साहिबा को दोबारा जवानी इनायत की और उन के कसीर औलादें हुईं। **147 :** कि वोह इस वाक़िए से बलाओं पर सब्र करने और इस के सवाबे अ़ज़ीम से बा ख़बर हों और सब्र करें और सवाब पाएं। **148 :** कि उन्हों ने मेह़नतों और बलाओं और इ़बादतों की मशक़्क़तों पर सब्र किया। **149 :** या'नी ह़ज़रते यूनुस इब्ने मत्ता को **150 :** अपनी क़ौम से जिस ने उन की दा'वत न क़बूल की थी और नसीह़त न मानी थी और कुफ़्र पर क़ाइम रही थी, आप ने गुमान किया कि येह हिजरत आप के लिये जाइज़ है क्यूं कि इस का सबब सिर्फ़ कुफ़्र और अहले कुफ़्र के साथ बुग़्ज़ और **अल्लाह** के लिये ग़ज़ब करना है लेकिन आप ने इस हिजरत में हुक्मे इलाही का इन्तिज़ार न किया **151 :** तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मछली के पेट में डाला। **152 :** कई क़िस्म की अंधेरियां थीं दरिया की अंधेरी, रात की अंधेरी, मछली के पेट की अंधेरी। इन अंधेरियों में ह़ज़रते यूनुस عَلَيۡهِ السَّلَام ने अपने परवर्दगार से इस त़रह़ दुआ़ की, कि

www.dawateislami.net

اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۸۷﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ

मा'बूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बेजा हुवा[153] तो हम ने उस की पुकार सुन ली

وَنَجَّیْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُنْجِی الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۸۸﴾ وَزَكَرِیَّاۤ اِذْ نَادٰی

और उसे ग़म से नजात बख़्शी[154] और ऐसी ही नजात देंगे मुसल्मानों को[155] और ज़करिय्या को जब उस ने अपने

رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ ﴿۸۹﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۪

रब को पुकारा ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़[156] और तू सब से बेहतर वारिस[157] तो हम ने उस की दुआ क़बूल की

وَوَهَبْنَا لَهٗ یَحْیٰی وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا یُسٰرِعُوْنَ فِی

और उसे[158] यह्या अ़ता फ़रमाया और उस के लिये उस की बीबी संवारी[159] बेशक वोह[160] भले कामों में जल्दी

الْخَیْرٰتِ وَیَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِیْنَ ﴿۹۰﴾ وَالَّتِیْۤ

करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं और उस औ़रत

اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِیْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَاۤ اٰیَةً

को जिस ने अपनी पारसाई (पर) निगाह रखी[161] तो हम ने उस में अपनी रूह फूंकी[162] और उसे और उस के बेटे को सारे जहां

لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۱﴾ اِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ

के लिये निशानी बनाया[163] बेशक तुम्हारा येह दीन एक ही दीन है[164] और मैं तुम्हारा रब हूं[165]

فَاعْبُدُوْنِ ﴿۹۲﴾ وَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَیْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَیْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَمَنْ ع ٦ ١٨ ٦

तो मेरी इबादत करो और औरों ने अपने काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिये[166] सब को हमारी त़रफ़ फिरना है[167] तो जो

یَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْیِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ

कुछ भले काम करे और हो ईमान वाला तो उस की कोशिश की बे क़दरी नहीं और हम उसे

153 : कि मैं अपनी क़ौम से क़ब्ल तेरा इज़्न पाने के जुदा हुवा, ह़दीस शरीफ़ में है कि जो कोई मुसीबत ज़दा बारगाहे इलाही में इन कलिमात से दुआ करे तो अल्लाह तआ़ला उस की दुआ क़बूल फ़रमाता है। 154 : और मछली को हुक्म दिया तो उस ने ह़ज़रते यूनुस عَلَیْهِ السَّلَام को दरिया के किनारे पर पहुंचा दिया। 155 : मुसीबतों और तक्लीफ़ों से जब वोह हम से फ़रियाद करें और दुआ करें। 156 : या'नी बे औलाद, बल्कि वारिस अ़ता फ़रमा 157 : ख़ल्क़ की फ़ना के बा'द बाक़ी रहने वाला। मुद्दआ येह है कि अगर तू मुझे वारिस न दे तो भी कुछ ग़म नहीं क्यूं कि तू बेहतर वारिस है। 158 : फ़रज़न्दे सईद 159 : जो बांझ थी उस को क़ाबिले विलादत किया। 160 : या'नी अम्बियाए मज़्कूरीन। 161 : पूरे त़ौर पर कि किसी त़रह़ कोई बशर उस की पारसाई को छू न सका। मुराद इस से ह़ज़रते मरयम हैं। 162 : और उस के पेट में ह़ज़रते ईसा को पैदा किया। 163 : अपने कमाले क़ुदरत की, कि ह़ज़रते ईसा को उस के बत्न से बिग़ैर बाप के पैदा किया। 164 : दीने इस्लाम, येही तमाम अम्बिया का दीन है, इस के सिवा जितने अद्यान हैं सब बात़िल, सब को इसी दीन पर क़ाइम रहना लाज़िम है। 165 : न मेरे सिवा कोई दूसरा रब, न मेरे दीन के सिवा और कोई दीन 166 : या'नी दीन में इख़्तिलाफ़ किया और फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए। 167 : हम उन्हें उन के आ'माल की जज़ा देंगे।

www.dawateislami.net

كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰۤى

लिख रहे हैं और ह़राम है उस बस्ती पर जिसे हम ने हलाक कर दिया कि फिर लौट कर आएं[168] यहां तक

اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَ

कि जब खोले जाएंगे याजूज व माजूज[169] और वोह हर बुलन्दी से ढलकते होंगे और

اقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ

क़रीब आया सच्चा वा'दा[170] तो जभी आंखें फट कर रह जाएंगी काफ़िरों की[171] कि

يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا

हाए हमारी ख़राबी बेशक हम[172] इस से ग़फ़्लत में थे बल्कि हम ज़ालिम थे[173] बेशक तुम[174] और जो

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ

कुछ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो[175] सब जहन्नम के ईंधन हो तुम्हें उस में जाना अगर येह[176]

هٰۤؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ

ख़ुदा होते जहन्नम में न जाते और उन सब को हमेशा उस में रहना[177] वोह उस में रैंकें (चीख़ें चिल्लाएं)गे[178] और

هُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤى ۙ

वोह उस में कुछ न सुनेंगे[179] बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका

اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ ۙ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا

वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं[180] वोह उस की भिनक [हलकी सी आवाज़ भी] न सुनेंगे[181] और वोह अपनी मन मानती

168 : दुन्या की त़रफ़ तलाफ़िये आ'माल व तदारुके अह़वाल के लिये। या'नी इस लिये कि उन का वापस आना ना मुम्किन है। मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान किये हैं कि जिस बस्ती वालों को हम ने हलाक किया उन का शिर्को कुफ़्र से वापस आना मुह़ाल है, येह मा'ना इस तक़्दीर पर हैं जब कि "لَا" को ज़ाइदा क़रार दिया जाए और अगर "لَا" ज़ाइदा न हो तो मा'ना येह होंगे कि दारे आख़िरत में उन का ह़यात की त़रफ़ न लौटना ना मुम्किन है। इस में मुन्किरीने बअ़्स का इब्त़ाल है और ऊपर जो كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ और لَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ फ़रमाया गया इस की ताकीद है। (تفسیر کبیر وغیرہ) **169 :** क़रीबे क़ियामत। और याजूज माजूज दो क़बीलों के नाम हैं। **170 :** या'नी क़ियामत **171 :** उस दिन के होल और दहशत से, और कहेंगे **172 :** दुन्या के अन्दर **173 :** कि रसूलों की बात न मानते थे और उन्हें झुटलाते थे। **174 :** ऐ मुश्रिको ! **175 :** या'नी तुम्हारे बुत **176 :** बुत जैसा कि तुम्हारा गुमान है **177 :** बुतों को भी और उन के पूजने वालों को भी। **178 :** और अ़ज़ाब की शिद्दत से चीख़ेंगे और दहाड़ेंगे। **179 :** जहन्नम के शिद्दते जोश की वज्ह से। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया जब जहन्नम में वोह लोग रह जाएंगे जिन्हें उस में हमेशा रहना है तो वोह आग के ताबूतों में बन्द किये जाएंगे वोह ताबूत और ताबूतों में फिर वोह ताबूत और ताबूतों में और उन ताबूतों पर आग की मेख़ें जड़ दी जाएंगी तो वोह कुछ न सुनेंगे और न कोई उन में किसी को देखेगा। **180 :** इस में ईमान वालों के लिये बिशारत है। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने येह आयत पढ़ कर फ़रमाया कि मैं उन्हीं में से हूं और अबू बक्र और उ़मर और उ़स्मान और त़ल्ह़ा और ज़ुबैर और सा'द और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم एक रोज़ का'बए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए, उस वक़्त क़ुरैश के सरदार ह़तीम में मौजूद थे और का'बा शरीफ़ के गिर्द तीन सो साठ बुत थे, नज़्र बिन ह़ारिस

www.dawateislami.net

اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ۚ ﴿۱۰۲﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ

ख़्वाहिशों में[182] हमेशा रहेंगे उन्हें ग़म में न डालेगी वोह सब से बड़ी घबराहट[183] और फ़िरिश्ते उन की पेशवाई

الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ

को आएंगे[184] कि येह है तुम्हारा वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था जिस दिन हम आस्मान को लपेटेंगे

كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَاۤ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ

जैसे सिजिल फ़िरिश्ता[185] नामए आ'माल को लपेटता है हम ने जैसे पहले उसे बनाया था वैसे ही फिर कर देंगे[186] येह वा'दा है हमारे ज़िम्मे

اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ

हम को इस का ज़रूर करना और बेशक हम ने ज़बूर में नसीहत के बा'द लिख दिया कि

الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ

इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे[187] बेशक येह कुरआन काफ़ी है

عٰبِدِيْنَ ؕ ﴿۱۰۶﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰۤى

इबादत वालों को[188] और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिये[189] तुम फ़रमाओ मुझे तो येही वह्य

सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने आया और आप से कलाम करने लगा, हुज़ूर ने उस को जवाब दे कर साकित कर दिया और येह आयत तिलावत फ़रमाई : اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ कि तुम और जो कुछ **अल्लाह** के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं, येह फ़रमा कर हुज़ूर तशरीफ़ ले आए, फिर अ़ब्दुल्लाह बिन ज़िबा'रा सहमी आया और उस को वलीद बिन मुग़ीरा ने उस गुफ़्तगू की ख़बर दी कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम मैं होता तो उन से मुबाहसा करता इस पर लोगों ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बुलाया इब्ने ज़िबा'रा येह कहने लगा कि आप ने येह फ़रमाया है कि तुम और जो कुछ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि हां। कहने लगा यहूद तो हज़रते उ़ज़ैर को पूजते हैं और नसारा हज़रते मसीह़ को पूजते हैं और बनी मलीह़ फ़िरिश्तों को पूजते हैं। इस पर **अल्लाह** तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बयान फ़रमा दिया कि हज़रते उ़ज़ैर और मसीह़ और फ़िरिश्ते वोह हैं जिन के लिये भलाई का वा'दा हो चुका और वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं और हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दर ह़क़ीक़त यहूदो नसारा वग़ैरा शैतान की परस्तिश करते हैं। इन जवाबों के बा'द उस को मजाले दम ज़दन न रही और वोह साकित रह गया और दर ह़क़ीक़त उस का ए'तिराज़ कमाले इनाद (सख़्त दुश्मनी की वज्ह) से था क्यूं कि जिस आयत पर उस ने ए'तिराज़ किया उस में ''مَا تَعْبُدُوْنَ'' है और ''مَا'' ज़बाने अ़रबी में ग़ैर ज़विल उ़क़ूल के लिये बोला जाता है, येह जानते हुए उस ने अन्धा बन कर ए'तिराज़ किया, येह ए'तिराज़ तो अहले ज़बान की निगाहों में खुला हुवा बातिल था मगर मज़ीद बयान के लिये इस आयत में तौज़ीह़ फ़रमा दी गई। **181 :** और उस के जोश की आवाज़ भी उन तक न पहुंचेगी वोह मनाज़िले जन्नत में आराम फ़रमा होंगे। **182 :** ख़ुदावन्दी ने'मतों और करामतों में **183 :** या'नी नफ़्ख़ए अख़ीरा **184 :** क़ब्रों से निकलते वक़्त मुबारक बादें देते तहनियत पेश करते और येह कहते **185 :** जो कातिबे आ'माल है आदमी की मौत के वक़्त उस के **186 :** या'नी हम ने जैसे पहले अ़दम से बनाया था वैसे ही फिर मा'दूम करने के बा'द पैदा कर देंगे या येह मा'ना हैं कि जैसा मां के पेट से बरहना, ग़ैर मख़्तून पैदा किया था ऐसा ही मरने के बा'द उठाएंगे। **187 :** इस ज़मीन से मुराद ज़मीने जन्नत है और हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की ज़मीनें मुराद हैं जिन को मुसल्मान फ़त्ह़ करेंगे और एक क़ौल येह है ज़मीने शाम मुराद है। **188 :** कि जो इस का इत्तिबाअ़ करे और इस के मुताबिक़ अ़मल करे जन्नत पाए और मुराद को पहुंचे और इबादत वालों से मोमिनीन मुराद हैं और एक क़ौल येह है कि उम्मते मुह़म्मदिय्यह मुराद है जो पांचों नमाज़ें पढ़ते हैं रमज़ान के रोज़े रखते हैं ह़ज करते हैं। **189 :** कोई हो, जिन्न हो या इन्स, मोमिन हो या काफ़िर। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हुज़ूर का रह़मत होना आ़म है ईमान वाले के लिये भी और उस के लिये भी जो ईमान न लाया, मोमिन के लिये तो आप दुन्या व आख़िरत दोनों में रह़मत हैं और जो ईमान न लाया उस के लिये आप दुन्या में रह़मत

إِلَىَّ أَنَّمَآ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ

होती है कि तुम्हारा ख़ुदा नहीं मगर एक **अल्लाह** तो क्या तुम मुसल्मान होते हो फिर अगर वोह मुंह फेरें[190] तो फ़रमा दो

آذَنتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِيٓ أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

मैं ने तुम्हें लड़ाई का ए'लान कर दिया बराबरी पर और मैं क्या जानूं[191] कि पास है या दूर है वोह जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है[192]

إِنَّهُۥ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ أَدْرِيْ

बेशक **अल्लाह** जानता है आवाज़ की बात[193] और जानता है जो तुम छुपाते हो[194] और मैं क्या जानूं

لَعَلَّهُۥ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلٰى حِينٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ۗ وَ

शायद वोह[195] तुम्हारी जांच हो[196] और एक वक़्त तक बरत्वाना[197] नबी ने अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब हक़ फ़ैसला फ़रमा दे[198] और

رَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾ ع

हमारे रब रहमान ही की मदद दरकार है उन बातों पर जो तुम बताते हो[199]

ربع النصف

اٰیاتھا ٧٨ | ٢٢ سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِیَّةٌ ١٠٣ | رکوعاتھا ١٠

सूरए हज्ज मदनिय्या है इस में अठत्तर आयतें और दस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

हैं कि आप की बदौलत ताख़ीरे अ़ज़ाब हुई और ख़सफ़ व मस्ख़ और इस्तीसाल के अ़ज़ाब उठा दिये गए। तफ़्सीरे रूहुल बयान में इस आयत की तफ़्सीर में अकाबिर का येह क़ौल नक़्ल किया है कि आयत के मा'ना येह हैं कि हम ने आप को नहीं भेजा मगर रहमते मुत्लक़ा, ताम्मा, कामिला, आ़म्मा, शामिला, जामिआ़, मुहीता ब जमीअ़ मुक़य्यदात, रहमते ग़ैबिया व शहादते इ़ल्मिय्या व ऐनिया व वुजूदिया व शुहूदिया व साबिक़ा व लाहिक़ा وغیر ذالک तमाम जहानों के लिये आलमे अरवाह हों या आलमे अज्साम ज़विल उ़क़ूल हों या ग़ैर ज़विल उ़क़ूल और जो तमाम आलमों के लिये रहमत हो लाज़िम है कि वोह तमाम जहान से अफ़्ज़ल हो। **190 :** और इस्लाम न लाएं **191 :** बे ख़ुदा के बताए। या'नी येह बात अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नहीं है। यहां दिरायत की नफ़ी फ़रमाई गई "दिरायत" कहते हैं अन्दाज़े और क़ियास से जानने को जैसा कि मुफ़रदाते राग़िब और रद्दुल मुह़तार में है, इसी लिये **अल्लाह** तआला के वासिते लफ़्ज़ "दिरायत" इस्ति'माल नहीं किया जाता और क़ुरआने करीम के इत्लाक़ात इस पर दलालत करते हैं जैसा कि फ़रमाया مَا كُنتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ लिहाज़ा यहां बे ता'लीमे इलाही मह़ज़ अपने अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि मुत्लक़ इल्म की और मुत्लक़ इल्म की नफ़ी कैसे हो सकती है जब कि इसी रुकूअ़ के अव्वल में आ चुका है وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ या'नी क़रीब आया सच्चा वा'दा, तो कैसे कहा जा सकता है कि वा'दे का क़ुर्ब व बो'द किसी तरह मा'लूम नहीं, ख़ुलासा येह है कि अपने अ़क़्लो क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि ता'लीमे इलाही से जानने की। **192 :** अ़ज़ाब का या क़ियामत का। **193 :** जो ऐ कुफ़्फ़ार तुम ए'लान के साथ इस्लाम पर ब तरीक़े त़ा'न कहते हो **194 :** अपने दिलों में या'नी नबी की अ़दावत और मुसल्मानों से ह़सद जो तुम्हारे दिलों में पोशीदा है **अल्लाह** उस को भी जानता है सब का बदला देगा। **195 :** या'नी दुन्या में अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र करना **196 :** जिस से तुम्हारा ह़ाल ज़ाहिर हो जाए। **197 :** या'नी वक़्ते मौत तक। **198 :** मेरे और उन के दरमियान जो मुझे झुटलाते हैं, इस तरह कि मेरी मदद कर और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा। येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और कुफ़्फ़ार बद्र व अह़ज़ाब व हुनैन वग़ैरा में मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। **199 :** शिर्क व कुफ़्र और बे ईमानी की। **1 :** सूरए हज्ज बक़ौले इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما व मुजाहिद मक्किय्या है सिवाए छ[6] आयतों के जो هٰذٰنِ خَصْمٰنِ से शुरूअ़ होती हैं, इस सूरत में दस रुकूअ़ और अठत्तर आयतें और एक हज़ार दो सो इकानवे कलिमात

www.dawateislami.net